साहित्य-संस्कृति

दखल

पाठक के नाम एक खत-प्रतिलिपि

गिरिराज किराडू

दो अप्रैल 2008 को हमने हिंदी-अंग्रेजी में साहित्य और विचार की एक द्विभाषी पत्रिका *प्रतिलिपि* का ऑनलाइन प्रकाशन शुरू किया। इसके पहले अंक में थोड़े से लेखक थे, महीने भर की तैयारी थी और दो साहित्य संपादकों और एक कला संपादक के अलावा कोई चौथा मददगार नहीं था। पिछले तीन वर्ष में पत्रिका के दस अंक आए हैं जिनमें दुनिया की 25 भाषाओं के 350 से अधिक लेखकों कलाकारों का काम शामिल है। पत्रिका के पास भारतीय और विदेशी भाषाओं के आठ परामर्शक हैं और अमिताव कुमार, के सच्चिदानंदन, मुकुल केशवन, अर्शिया सत्तार, मदन सोनी, तेजी ग्रोवर जैसे प्रतिष्ठित लेखक इसके साथ बतौर सलाहकार जुड़ गए हैं। पहले अंक में हमारे रोजाना ऑनलाइन पाठक 25 थे अब 800 से अधिक हैं। यह सब बिना किसी सरकारी और कॉर्पोरेट मदद के हुआ है। संसाधन सीमित होने का फायदा यह हुआ कि हमने वैकल्पिक रास्ते ढूंढे। पत्रिका की प्रिंटिंग के लिए गोवा स्थित एक फर्म से तालमेल करके एक नई टेकनोलॉजी से 'प्रिंट-ऑन-डिमांड' प्रकाशित करना शुरू किया। हमें विश्वास था कि पाठक को केंद्र में रखने से सकारात्मक परिणाम आएंगे। हालांकि हमें कोई ठोस अंदाजा नहीं था कि एक द्विभाषी फॉर्मेट के लिए ऑनलाइन या प्रिंट रीडरशिप कैसी होगी। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लेखन को अंग्रेजी और दूसरी विश्व भाषाओं तक एक नए माध्यम में पहुंचाने का काम हमारी प्राथमिकता थी लेकिन असल लक्ष्य था भारतीय भाषाओं के काम को उनके साथ बराबरी वाले एक स्पेस में खड़ा करना। हमने इसे एक जिद की तरह करने की कोशिश की और बहुत हद तक सफल हुए।

हिंदी में अक्सर अदृश्य बताए जाने वाले उस किरदार का भरोसा है जिसे पाठक कहते हैं। उसके बिना हिंदी प्रकाशन संस्थानों की औसत उम्र शायद पांच साल होती।

तीन पुस्तकें सीधे स्वीडी से अंग्रेजी में अनूदित हैं जो दुनिया में पहली बार प्रकाशित हुई हैं। मुझे प्रसन्नता है कि स्वीडी के दो सबसे सम्मानित लेखकों आग्नेता प्लेयेल और लार्श एंडरसन की *ए विंटर इन स्टॉकहोम* और *द लेजेंड ऑफ प्लेग किंग* जैसी कृतियां हम प्रकाशित कर पाए। डेनिश मूल के युवा लेखक यान हेनरिक स्वान से दोस्ती एक ऐसा अनुभव है कि उनका प्रकाशक होना एक अनोखी खुशबू का अहसास देता है। आजकल बेघर महिलाओं को कविता लिखने के गुर सिखा रहे यान एक पुल पर चौकीदारी और एक प्रमुख साहित्यिक पत्रिका का संपादन कर चुके हैं। उनका उपन्यास *मेनोलिस मोपेड्स* मनुष्य और टेकनोलॉजी के संबंधों की गहरी पड़ताल करता है।

लेकिन यहां मैं हिंदी किताबों पर बात करना चाहूंगा। हिंदी के प्रमुख युवा कथाकार प्रभात रंजन हमारी पत्रिका के अब तक सबसे अधिक पढ़े गए लेखक हैं, इसलिए उनका कहानी संग्रह *बोलेरो क्लास* हमारे लिए एक आसान निर्णय था। हम उनकी लोकप्रियता के जादू से वाकिफ थे। उनकी कहानियां दूरदराज के छोटे इलाकों में बिखरे ऐसे पात्रों से बनती हैं जिनका लोकल बहुत दूर से आ रहे ग्लोबल से बनता बिगड़ता रहता है। वे हमें 'द ग्रेट इंडिया स्टोरी' के असल अंधेरे अंडरग्राउंड में ले जाती हैं। उनकी कथा का अपना खास लोकल बिहार और नेपाल की सरहद का कस्बा सीतामढ़ी है जो फणीश्वरनाथ रेणु के *पूर्णिया* और आर के नारायण के *मालगुडी* की याद दिलाता है।

इतने ही बड़े प्रशंसक हम मनोज रूपड़ा की अनूठी लंबी कहानियों के भी थे। जब वह अपनी कहानियों की किताब *टावर ऑफ सायलेंस* हमारे साथ प्रकाशित करने पर सहमत हो गए तो लगा हिंदी का सेट भी बन जाएगा। रियल और वर्चुअल के आर-पार फंतासी के बियाबान में फैली उनकी कहानियों में आप अचानक निदा फाजली और अरुंधती राय जैसी वास्तविक शख्सियतों से टकरा जाते हैं और हैरान होते हैं कि वे भी कहानियों के किरदारों जितनी ही आभासी जान पड़ रही हैं।

तीसरी किताब के चयन के लिए हमने बहुत कोशिश की। उधर, जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल की तारीख नजदीक आ रही थी। प्रभात रंजन जीते-जी लेजेंड हो चुके लातिन अमेरिकी लेखक *गैब्रिएल गार्सिया मार्केस* के जीवन पर एकाग्र अपनी किताब *मार्केस की कहानी* पूरी कर चुके थे और एक शाम यह सरप्राइज मेरे मेल बॉक्स में था। हिंदी में जहां हिंदी लेखकों के जीवन पर लिखी किताबें ही दुर्लभ हैं, स्पेनिश के इस जादूगर लेखक पर खोजी अंतर्दृष्टि के साथ लिखी गई यह किताब एक उपलब्धि है। नोबेल पुरस्कार प्राप्त मार्केस को यह किताब कुछ इस तरह समझने का प्रयास करती है कि उनके जीवन की अंतरंगता और साधारणता, उनके लेखन का जादू और उसका सच, उनके अपने व्यक्तित्व की रहस्यमयता और उसकी संजीदगी -कुछ भी इसकी नजर से ओझल नहीं होता।

उसके बाद से हम चार किताबें और प्रकाशित कर चुके हैं जिनमें आतंक और गांव पर केंद्रित विशेषांकों के पुस्तकाकार संस्करणों और रुस्तम सिंह के दार्शनिक निबंधों के संग्रह *वीपिंग एंड अदर एसेज* के साथ-साथ *होम फ्रॉम ए डिस्टेंस* भी शामिल है जो पिछले दस वर्ष में समकालीन हिंदी कविता का अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाला पहला संचयन है। इसमें नागार्जुन, धूमिल, श्रीकांत वर्मा, कुंवर नारायण, विनोद कुमार शुक्ल, केदारनाथ सिंह, विष्णु खरे, अशोक वाजपेयी,मंगलेश डबराल, कमलेश, वीरेन डंगवाल, असद जैदी, उदयन वाजपेयी, उदय प्रकाश के साथ पंकज चतुर्वेदी और कृष्ण मोहन झा जैसे युवा हस्ताक्षरों की कविताएं तथा राबर्ट हक्स्टेड, आर्लीऩ जीद, आलोक भल्ला, विनय धारवाड़कर, राहुल सोनी, मनोज कुमार झा के अनुवाद में शामिल हैं।

पत्रिका की तरह किताबें भी हम उसी पाठक-केंद्रित नजरिये के साथ वितरित करने की कोशिश कर रहे हैं। ●

(लेखक कवि और प्रकाशक हैं)